

आकांक्षा का महत्व

IMPORTANCE OF ASPIRATION



स्वेट मार्डेन



स्वेट मार्डेन आकांक्षा का महत्व

IMPORTANCE OF ASPIRATION

“आत्मा को जिस आशा-आकांक्षा की शिक्षा दी जाएगी,
आत्मा द्वारा उसी को कार्यरूप में परिणत किया जाएगा।”

— स्वेट मार्डेन



(SWETT MARDEN)

स्वेट मार्डेन एक महान लेखक थे। उनके द्वारा लिखी किताबें द्वारा उन्होंने लाखों-करोड़ों लोगों को अपने प्रेरणादायक विचारों से प्रभावित किया और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाया।

डॉ. ओरीसन स्वेट मार्डेन (1848-1924) एक अमेरिकी प्रेरणादायक लेखक थे जिन्होंने जीवन में सफलता प्राप्त करने के बारे में लिखा और 1897 में **SUCCESS** पत्रिका की स्थापना की। उनके लेखन में सामान्य ज्ञान के सिद्धांतों और सद्धरणों की चर्चा है जो एक सफल, सफल जीवन के लिए बनाते हैं। उनके कई विचार न्यू थॉट दर्शन पर आधारित हैं।

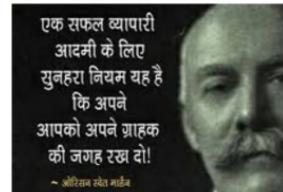
उनकी पहली पुस्तक, **पुशिंग टू द फ्रंट (Pushing to the Front)** (1894), तत्काल बेस्ट-सेलर बन गई। बाद में मार्डेन ने प्रति वर्ष दो खिताबों के औसत से पचास या अधिक पुस्तकें और पुस्तिकाएं प्रकाशित कीं।

“यदि हम अपने योग्यन को बनाये रखना चाहते हैं तो हमें सदा अपनी मनःस्थिति यौवन की भावना से परिपूर्ण रखनी चाहिए, सौन्दर्य की भावना से भरपूर रखनी चाहिए। हमें अधिक समय सौन्दर्य एवं यौवन की मनःस्थिति में रहना चाहिए।”

— स्वेट मार्डेन

आकांक्षा का महत्व

आशा - अभिलाषा किसी वस्तु की आकृति को गीली मिट्टी में तैयार करके सांचे में ढालती है, कर्म जीवन में उस वस्तु के आकार को संगमरमर जैसा साकार, ठोस और दृढ़ बनाकर प्रकट कर देता है। आप अपने शब्दों द्वारा जो प्रार्थना करते हैं, वह आपका विश्वास या मान्यता नहीं है, आपकी मान्यता तो आपकी महत्वाकांक्षा ही है।



एक सफल व्यापारी
आदमी के लिए
युवहरा वियम यह है
कि अपने
आपको अपने ग्राहक
की जगह रखा दो।
~ जॉर्जस बेस नार्डे

संसार में कोई भी ऐसा हर्ष नहीं जिसके लिए आपकी आत्मा भूखी हो और वह आपको न मिल सके, कोई ऐसी आशा नहीं जिसे आपने वर्षों तक अपने मन में संजोया हो और वह पूरी न हुई हो, परन्तु वांछित हर्ष तभी प्राप्त होगा और आशा की पूर्ति होगी यदि पहले आप उसके योग्य बनें। परन्तु इच्छा करना योग्य बनने का पहला कदम है, क्योंकि इच्छा जितनी तीव्र होती जाएगी उतना ही आप अपने मनोवांछित वरदान के निकट पहुंचते जाएंगे।

आप मन में जिस वस्तु की इच्छा करते हैं, वह दूर पड़ी हुई आपकी प्रतीक्षा कर रही है, वह छिपी-ढकी पड़ी है-चुपचाप और अदृश्य। यदि वह आपकी आत्मा के लिए, आपके जीवन तथा अस्तित्व के लिए आवश्यक है, तो अपने जीवन को उसके योग्य बनाइए-फिर आप ज्यों ही उसे पुकारेंगे, वह स्वयं ही आपके पास आ जाएगी।

क्रोध , धृणा , अहम , मोह , आसक्ति ऐसे भाव हैं जो मनुष्य की सोचने समझने की शक्ति समाप्त कर देते हैं और वह खुद अपना विनाश कर लेता है। इस विनाश से बचने के लिए मनुष्य को आसर्मथन करना चाहिए।

आत्मा को जिस आशा-आकांक्षा की शिक्षा दी जाएगी, आत्मा द्वारा उसी को कार्यरूप में परिणत किया जाएगा।

हमारी हार्दिक लालसाएं, हमारी आत्मिक आकांक्षाएं केवल कल्पना की कोरी उड़ाने ही नहीं हैं, केवल दिवास्वप्न ही नहीं हैं। वे उन वस्तुओं की भविष्यवाणियां हैं, शुभ-सागुन हैं, संवाद-दूतियां हैं, जो वस्तुएं वास्तव में यथार्थ में परिणत होने वाली हैं जो हमें मिलने वाली हैं।

हमारी लालसाएं तथा आकांक्षाएं हमारी सामर्थ्य के संकेत-चिह्न हैं। उनसे हमारे लक्ष्य की ऊंचाई नापी जाती है, हमारी कार्य-कुशलता की सीमा-रेखा बताई। जाती है। हम जिस पदार्थ को पाना चाहते हैं; सच्चाई से उसकी इच्छा करते हैं, ईमानदारी से उसके लिए प्रयत्न करते हैं, वही एक दिन ठोस यथार्थ बन जाता है। हमारे सामने जो आदर्श हैं, वे वास्तव में आने वाली वास्तविकताओं की ही रूप-रेखाएं हैं। जिन ठोस पदार्थों की हम कामना करते हैं, ये कामनाएं उन्हीं पदार्थों की रूप-रेखा की झलक हैं।

एक मूर्तिकार जानता है कि उसने अपने मन में मूर्ति का जो आदर्श सोच रखा है वह केवल उसकी मिथ्या कल्पना ही नहीं है, बल्कि जो कुछ आगे बनने वाला है, उसी का भविष्य कथन है। जो कुछ संगमरमर के ठोस रूप में परिवर्तित । होने वाला है, मूर्तिकार के मन में स्थित आदर्श उसी का पूर्व-प्रतिबिम्ब है।

जब हम किसी वस्तु के लिए इच्छा करना आरम्भ करते हैं, जब हम उसके लिए हृदय में तीव्र आकांक्षा को जन्म देते हैं तब हम उस वस्तु के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ने लगते हैं और जितनी तीव्रता, जितनी शक्ति तथा जितनी निरन्तरता से हम

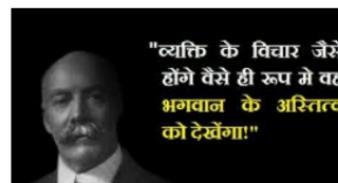
उस मनोकामना के लिए बुद्धिमत्तायुक्त तथा सतर्कतापूर्ण प्रयत्न करते हैं, उतने ही हम उसे प्राप्त करने के योग्य बनते जाते हैं।

हमारे कष्टों का कारण यह है कि हम जितना अधिक पदार्थों के संसर्ग में रहते हैं, उतना अपने आदर्श के संसर्ग में नहीं रहते, हालांकि हम अपने आदर्श को प्राप्त करने की कामना करते हैं। उदाहरणतः, यदि हम अपने यौवन को बनाये रखना चाहते हैं तो हमें सदा अपनी मनःस्थिति यौवन की भावना से परिपूर्ण रखनी चाहिए, सौन्दर्य की भावना से भरपूर रखनी चाहिए। हमें अधिक समय सौंदर्य एवं यौवन की मनःस्थिति में रहना चाहिए।

उद्देश्य में जीने, मनःस्थिति को उद्देश्य से परिपूर्ण रखने का लाभ यह होता है कि सारी शारीरिक, मानसिक तथा चारित्रिक त्रुटियां दूर हो जाती हैं। यौवन को उद्देश्य बनाकर उसी के विचारों में मग्न होकर जीने का लाभ यह होता कि बुद्धिमत्ता की तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता। हमारे आदर्श से उसका कोई मेल नहीं, क्योंकि वह अपूर्ण है और अपने आदर्श में हम उसे घुसने तक नहीं देते। जहां हमारा यौवन का आदर्श विद्यमान है, वहां वृद्धत्व का प्रवेश ही नहीं हो सकता।

अवसर से लाभ उठाने में असाधारण रूप से वाही लोग सफल हुए हैं। जिन्होंने प्राप्त अवसरों में सुधार लाकर उन्हें अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न किया।

हमने जो अपनी कल्पना द्वारा सौन्दर्य का आदर्श मॉडल तैयार किया है वह यौवन से भरपूर है, सौन्दर्य से परिपूर्ण है। वहां क्षीणता, विकृति एवं कुरुपता लेशमात्र भी नहीं है। अतः आदर्श को मन में संजोकर जीवन जीने की कला से आश्चर्यजनक लाभ होता है, क्योंकि उस दशा में निरन्तर हमारे मनश्वक्षुओं के सम्मुख हमारी आदर्श-मूर्ति ही विराजमान रहती है, जो पूर्णता से समन्वित होती है तथा उसी को पाने के लिए हम प्रयत्नशील रहते हैं। इससे हमारी आशा बढ़ती है, तथा अपने आदर्श को पूर्ण रूप से प्राप्त करने में हमारा विश्वास बढ़ता है, क्योंकि हम अपने मनश्वक्षुओं द्वारा यथार्थ की झलक पाते हैं, जिसे हम स्वभावतः ही कभी-न-कभी, कहीं-न-कहीं पाना चाहते हैं और समझते हैं कि वह यथार्थ, ठोस रूप में प्राप्त होकर रहेगा।



हम पदार्थों को जिस रूप या शक्ति में प्राप्त करना चाहते हैं उस रूप में। सोचने से, या उसी रूप में उनकी रचना हो ऐसा दृढ़ आग्रह रखने से, जिस रूप में वे बनने चाहिएं उसी रूप में वे बनें, इस पर लगातार जोर देते रहने से और। साथ ही अपनी पूर्णता का दृढ़तापूर्वक दावा करते रहने से, ऐसा दृढ़ संकल्प और विश्वास करने से कि जिस अच्छी वस्तु की हम कामना करते हैं, वह हमसे दूर रह ही नहीं सकती, ऐसी मनःस्थिति में हमें अपना आदर्श और भी निखरे। हुए रूप में दिखाई देने लगता है और हमारी जीवन-प्रक्रिया उसका निर्माण करके ही रहती है।

आप जिस पुरुष या नारी के समान बनना चाहते हैं, उसका आदर्श निरन्तर अपने सम्मुख रखिए। अपनी कार्यकुशलता, विलक्षणता तथा सम्पूर्णता पर निरन्तर अपने ध्यान को एकाग्र रखिए और त्रुटियों का विचार, अपूर्णता का विद्यार, हीनता का विचार मन से बाहर निकाल दीजिए।

ईश्वर प्रत्येक मनुष्य को जीवन में ऐसा एक सुअवसर जरूर देता है। जिसका लाभ उठाकर वह धन, वैभव और सम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकता है।

अपनी त्रुटियों, दुर्बलताओं तथा असफलताओं का विचार लेशमात्र भी मन में न आने दीजिए। दृढ़ता-पूर्वक अपने आदर्श की सौन्दर्य-मूर्ति अपने नयनों के समक्ष रखिए तथा उसे प्राप्त करने के लिए निरन्तर उत्साह तथा उल्लास से प्रयत्न करते रहिए, तब आप अपने मनोवांछित आदर्श उद्देश्य को प्राप्त करने में अवश्य सफल होंगे।

आशा में अपार शक्ति भरी हुई है। इस विश्वास में कि जो कुछ चाहते हैं उसे पाकर ही रहेंगे, बड़ी भारी सामर्थ्य छिपी हुई है। हमारे स्वप्न अवश्य ही सत्य होकर रहेंगे, इस विश्वास में ही हमारी सफलता की रूप-रेखा निहित है।

मन को आशा से हरा-भरा रखने से बढ़कर ऊंचा उठाने वाली अन्य कोई आदत नहीं है, इस विश्वास से बढ़कर मन को उत्साह से भर देने वाला अन्य विचार ही नहीं है, कि हम जिस पदार्थ को चाहते हैं ठीक उसी रूप में वह हमें शीघ्र ही - अवश्य मिलने वाला है। हमारे लिए जो होगा अच्छा होगा, बुरा नहीं होगा-इस प्रकार के आत्म-विश्वास में अद्भुत शक्ति पाई जाती है। अपने मन में, दोहराते रहिए

—हम अवश्य सफल होंगे, असफल नहीं।

—हम अवश्य विजयी होंगे, पराजित नहीं।

—हम अवश्य प्रसन्न रहेंगे, दुखी और उदास नहीं।

इस प्रकार के आशावाद के विचार निरन्तर जगाए रखने से बढ़कर सहायक अन्य कोई उपाय नहीं है। मन आशा-आकांक्षा से भरपूर रहे, हर बात और हर घटना से लाभ की आशा रहे, उज्ज्वल पक्ष की ओर देखने की आदत रहे; प्रकाश की ओर देखने की प्रवृत्ति रहे तो फिर मनोवांछित फल प्राप्त करने में देर नहीं लगती। अपने हृदय में सम्पूर्ण श्रद्धा से यह विश्वास कीजिए कि आप उस कार्य को अवश्य ही करके रहेंगे जिसके लिए आपका जन्म हुआ है।

एक पल के लिए भी अपने मन में अविश्वास की एक रेखा तक न घुसने दीजिए। यदि वह आपके मन में घुसने का प्रयत्न करे, तो उसे परे धकेल दीजिए। केवल मित्रविचारों अर्थात् आशा-उमंग, उत्साह-उल्लहास और कर्मठता के विचारों को ही अपने मन में स्थान दीजिए। अपने मन में केवल अपने आदर्श की सर्वगुणसम्पन्न मूर्ति का ही ध्यान कीजिए। केवल उस आदर्श की प्रतिमूर्ति का निर्माण करने का प्रयत्न कीजिए जिसकां आपने दृढ़ निश्चय किया हुआ है। अपने आदर्श के समान ही अपने कार्य को भी निर्दोष और त्रुटिहीन बनाने के लिए कठिन परिश्रम कीजिए। जिस फल की प्राप्ति का आपने संकल्प किया हुआ है उसे सम्पूर्ण (अखण्ड तथा निर्दोष) रूप में ही प्राप्त करने का प्रयत्न कीजिए।

अपने मन के शत्रु विचारों (निराशा, शिथिलता, उत्साहहीनता तथा खिन्ता, आदि) को दूर कर दीजिए। रही कागज की तरह इन्हें फेंक दीजिए। जो विचारे आपका उत्साह भंग करे, जिससे आपका मन असफलता, अनुत्तीर्णता तथा पराजय की तरफ जाए-उस हीन भाव को निकाल फेंकिए।

आप क्या पाने या क्या बनने का प्रयत्न कर रहे हैं, इसकी परवाह नहीं अर्थात् आपका लक्ष्य भले ही कितना ऊंचा हो तो भी आप अपने मन में गिरावट न आने दें, निराशा को न घुसने दें। सदा मन में आशा भरे रहिए: आशावादी बनिए, आशापूर्ण बातें कीजिए, आशा पूरी होने के उल्लहास से मन को निरन्तर प्रफुल्लित रखिए। यदि आप ऐसा कर पाएंगे तो आपको अत्यन्त आश्वर्य होगा

कि आपकी योग्यताओं का अद्भुत विकास हो जाएगा, आपकी कुशलता तथा कार्य-शक्ति में आश्वर्यजनक वृद्धि हो जाएगी।

जब मन एक बार प्रसन्न रहने के स्वभाव वाला हो जाएगा, हर्ष से प्रफुल्लित। रहने की आदत वाला बन जाएगा, धन-समृद्धि के चित्रं देखने की प्रवृत्ति वाला हो जाएगा तब उसके लिए जलना, कुढ़ना, शिथिल रहना और गरीबी के विचारों से पस्त रहना कठिन हो जाएगा- उसका ध्यान शत्रु-विचारों की ओर नहीं जाएगा।

यदि कहीं हम अपने बच्चों को इस प्रकार की आदत डालें, तो मानव सम्यता में अवश्य ही क्रान्ति आ सकती है। इससे हमारे जीवन-स्तर में अपरिमित प्रगति हो सकती है।

आशावाद के प्रशिक्षण को प्राप्त करके मन स्वभाव से ही ऐसा हो जाता है कि वह अपनी अधिकतम शक्ति को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। तब वह असमंजस के स्थान पर सामंजस्य तथा समन्वय को प्राप्त कर लेता है, निर्दयता की जगह दयालुता से भरपूर हो जाता है, अशान्ति की बजाय शान्ति को प्राप्त कर लेता है, अनाङ्गीकार की जगह कुशलता को पा लेता है तथा असफलता का नहीं बल्कि सफलता और विजय का मुँह देखता है।

भविष्य अच्छा है-ऐसा विश्वास करने की आदत बना लेने मात्र से आप अच्छे पदार्थों को, धन-सम्पत्ति को अपनी ओर आकर्षित करने लगते हैं। आप शीघ्र ही विपुल धन के स्वामी बनने जा रहे हैं, अपने मन में सदैव ऐसे विचार रखिये, ऐसी ही कल्पना कीजिए। स्थापति अपने नक्शे के पीछे भवन की पूर्णता तथा सुन्दरता को देखता है। अपनी योजना की कल्पना में वह सम्पूर्ण भवन को साकार देखता है।

जीवन में हम जिस वस्तु को साकार रूप में प्रस्तुत करते हैं, उसे पहले सपने में साकार रूप में देखते हैं। यह कार्य कल्पना (imagination) द्वारा ही किया जाता है। एक भी ईंट या पत्थर रखे बिना पूरा भवन स्थपति के मन में पूरी तरह साकार रहता है, उसी प्रकार हम अपनी प्रत्येक रचना को उसके सम्पूर्ण विवरण के साथ, पहले अपनी कल्पना में साकार देखते हैं और उसके बाद ही उसकी उपलब्धि के लिए कोई कदम उठाते हैं।

हमारे सपने ही उत्साहपूर्ण प्रयत्नों की सर्वाधिक प्रेरक शक्ति हैं। उत्साहपूर्ण प्रयत्न ही हमारे सपनों को मूर्त (साकार) रूप प्रदान करते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे आर्किटेक्ट का प्लान भवन को पूर्ण बनाने की कार्य विधि का निर्धारक होता है। यदि भवन निर्माता स्थपति नक्शे का पूरी तरह अनुसरण नहीं करते, तो भवन कभी भी कल्पना के अनुरूप नहीं बन सकता।

सभी मनुष्य जो महान् कार्य कर गए हैं-स्वप्नद्रष्टा ही थे। उनके प्रत्येक कार्य की सुन्दरता का अनुपात हू-ब-हू उनकी कल्पना के विवरण से मिलता-जुलता होता है। जिस अनुपात में कल्पना सुन्दर होगी, उसी अनुपात में प्रयत्न कशलतापूर्ण होगा और उसी अनुपात में सफलता का स्वरूप सुन्दर होगा। कल्पना के विवरण पर, आदर्श की स्पष्टता पर, स्वप्न की निरन्तरता पर प्रयत्नों का स्वरूप निर्भर होता है।

यदि सपना प्रकटत: पूर्ण होता न दिखाई पड़े, तो उसका परित्याग नहीं कर देना चाहिए, क्योंकि कोई मनुष्य काम को पूर्ण हुआ तब तक नहीं देख सकता, जब तक वह कार्य पूर्ण न हो जाए। निरन्तर अपने आदर्श पर स्थिर रहिए। अपनी कल्पना को हाथ से न जाने दीजिए। कार्य साकार होने के प्रयत्न में क्या-क्या

त्रुटि आप से रह गयी है, इस ओर ध्यान दीजिए। उन त्रुटियों को दूर करते ही आपकी उपलब्धि साकार रूप में दृष्टिगत होने लगेगी।

अपने स्वप्न को उज्ज्वल रखिए, सदा मन में जगमगाता रखिए, जीवन में रोटी कमाने के पक्ष को इतना महत्वपूर्ण न बनाइए कि आपको स्वप्न की उपेक्षा करनी पड़े या आपका आदर्श मध्यम पड़ता जाए। प्रतिदिन के जीवन की चर्चा में ही सारा समय न खपा दीजिए। अपने कार्य की सफल उपलब्धि के लिए अधिकाधिक उत्साहपूर्ण प्रयत्न कीजिए। अपने इर्द-गिर्द ऐसा वातावरण बनाइए जिससे आपको अपना आदर्श उद्देश्य प्राप्त करने के लिए निरन्तर उत्साह प्राप्त होता रहे। उन लोगों की संगति कीजिए, जिनसे आपमें उत्साह और साहस का संचार हो, ऐसी पुस्तकें पढ़िए जो आपमें लक्ष्य मार्ग पर अग्रसर होते रहने की स्फूर्ति और प्रेरणा भरें। उन व्यक्तियों से सलाह लीजिए जो आपको कर्म के लिए प्रोत्साहित करें, संघर्ष के लिए प्रेरणा देते रहें, कार्य-कुशलता के लिए उपाय बतलाते रहें।

अपने आदर्श उद्देश्य की साफ रूप-रेखा अपने सामने रखिए, उसके किसी। भी पहलू को अस्पष्ट न रहने दीजिए। जितना महान् उद्देश्य है उतने ही परिमाण में आपका प्रयत्न भी महान होना चाहिए-तभी आप अपने सपने को साकार रूप में क्रियान्वित कर सकते हैं।

रात को शैव्या पर जाने से पूर्व कुछ समय एकान्त बैठकर अपने सपने पर पुनः विचार कीजिए-विचार कीजिए कि आपने दिन भर में उसके लिए क्या प्रयत्न किया, क्या-क्या त्रुटियां रह गयी हैं और उन्हें किस प्रकार दूर किया जा सकता है, शान्त भाव से एकान्त में बैठकर अपनी ॐ कल्पना का सम्पूर्ण स्वप्न देखिए, उसके समस्त विवरण के साथ। सपने या कल्पना से डरने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि 'सपने के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ, नष्ट हो जाता है। ईश्वर ने आपको कल्पना-शक्ति इसलिए नहीं दी कि आप उपहास का पात्र बनें। उसके पीछे कोई वास्तविकता अवश्य है। कल्पना-शक्ति एक, दिव्य वरदान है, बल्कि वह तमाम दिव्य कर्मों तथा अभूतपूर्व वस्तुओं की झाँकी है। ईश्वर ने आपको यह स्वप्न इसलिए दिया है। कि आप जन-साधारण की भीड़ से अलग होकर ऊँचे उठे और इन्द्रियों की दासता से ऊँचे उठकर उस स्वप्न को साकार बनाएं। कल्पना-शक्ति द्वारा आप सामान्य वस्तु को अंसामान्य बना सकते हैं, मामूली-से-मामूली चीज को बढ़िया और सुन्दर बना सकते हैं। कल्पना द्वारा आप कठोर परिस्थितियों को अनुकूल एवं सुखद बना सकते हैं।'

कल्पना वह शक्ति है जो मनुष्य को अपूर्व एवं दिव्य वस्तु के दर्शन कराती है, महान् वस्तु की साकार झाँकी दिखलाती है, बाधाओं को दूर करके उस आदर्श को पूर्ण करने का मार्ग सुझाती है।

स्वप्नों के स्वर्गीय मनोहर दर्शन हमें निराशा से दूर रहने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं। असफलताओं में वे हमें धीरज बंधाते हैं। अनुकूल परिणाम न होने पर भी वे हमें कार्य-निरत रखते हैं। हमारे प्रयत्नों का अधार ये कल्पनाएं ही हैं।

कल्पना का अर्थ मृगतृष्णा या आकाश-कुसुम की आशा करना नहीं है। कल्पना वास्तविक, उचित, कल्याणकारी, उपयोगी तथा आत्मा की उदात्तता से उद्भूत होनी चाहिए। कल्पना ऐसी होनी चाहिए जो हमें अपने जीवन को ऊँचा उठाने की निरन्तर प्रेरणा देती रहे, चाहे हमारी परिस्थितियां और वातावरण कितना ही प्रतिकूल हो, श्रेष्ठ कल्पना हमारे प्रयत्नों में शिथिलता नहीं आने देती। श्रेष्ठ

कल्पना हमें सदैव आदर्श कार्यस्थिति में रखती है। हमारी कार्य-कुशलता को संस्कारित करने में उसका महत्वपूर्ण योगदान होता है।

हमारी उचित इच्छा के पीछे कोई दैवी शक्ति होती है। इन्द्रियों के भोगों की लालसा के पीछे नहीं बल्कि जनकल्याणकारी, बहुजन हितकारी इच्छाओं के पीछे ही दिव्य-शक्ति विविधमान रहती है। आत्मा से उद्भुत उदात्त इच्छा कभी भी व्यक्ति के भोग-विलास तक सीमित नहीं रहती। आदर्श उद्देश्य के लिए की गयी इच्छा के पीछे ईश्वर का वरदायी हाथ होता है, जिससे व्यक्ति अपने व्यक्तित्व की पूर्ण श्रेष्ठता को अभिव्यक्ति देने में समर्थ होता है। आत्मा के ऊंचे ध्यान और चिन्तन के क्षणों में ही ऐसा श्रेष्ठ एवं दिव्य स्वप्न हम देखते हैं।

उसका उंदुभव क्षणिक सुख-भोग की लालसा से कदापि नहीं होता। “जब तक मनुष्य का आदर्श या सपना निर्धनता का होगा, तब तक वह निर्धन रहेगा।”

हमारे मन की प्रवृत्ति, हमारे हृदय की इच्छा ही वह निरन्तर की जाने वाली प्रार्थना है, जिसका उत्तर प्रकृति को देना पड़ता है। प्रकृति यह मानकर प्रतिक्रिया प्रकट करती है कि हमारी जैसी इच्छा है, वैसा ही फल हम चाहते हैं। प्रकृति यह मानती है कि हम अपनी इच्छा के अनुकूल ही कदम आगे बढ़ाते हैं। और प्रकृति हमें उसी तरफ बढ़ने में सहायता पहुंचाती है। लोग इस तथ्य को बहुत ही कम समझते हैं कि उनकी इच्छाएं ही निरन्तर प्रार्थनाएं हैं-प्रकृति उन्हें सुनकर वैसा ही फल देती है। प्रकृति हमारे मस्तिष्क की प्रार्थनाओं के अनुरूप। नहीं; बल्कि हमारे हृदय की प्रार्थनाओं के अनुरूप फल देती है। अब आप जैसा फल चाहते हैं, सच्चे हृदय से वैसी ही इच्छा कीजिए।

यदि हम अपनी मनोवृत्ति को उदार रखते हैं, यदि हम ईमानदारी से प्रयत्न करते हैं, यदि हम निरन्तर संघर्ष करते हैं, यदि हम अपने उद्देश्य के प्रति निरन्तर ईमानदार बने रहते हैं, तो प्रकृति हमें अवश्य ही सिद्धि प्रदान करती है-यही कुदरत का कानून है।

आशा-आकांक्षा पर अपने मन को निरन्तर एकाग्र करने में बड़ी भारी शक्ति छिपी हुई है। इस एकाग्र-चिन्तन द्वारा हम उस वस्तु को तीव्र वेग से अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं, जिसे हम पाना चाहते हैं। हमारी सम्पूर्ण कार्य-शक्ति इसी। एकाग्रता पर आश्रित होती है।

जिसकी हम आशा-आकांक्षा पल-पल करते रहते हैं, उसे हम पल-पल अपनी ओर खींचते रहते हैं। सिद्धि का यही महामन्त्र है।

हमारे हृदय की लालसाएं हमारी रचनात्मक शक्तियों में स्फूर्ति का संचार करती है और तभी हम उस पदार्थ को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं जिसकी हमारे मन में तीव्र लालसा होती है। हमारी तीव्र इच्छा-शक्ति ही हमारी कार्ययोग्यता में जीवन का संचार करती है, उसी से हमारी कर्म-सामर्थ्य बढ़ती और पुष्ट होती है, और उसी शक्ति से हम मनोवांछित फल प्राप्त करने में सफल होते हैं। प्रकृति एक महान भंडारी है उसके भंडार में संसार के सभी उत्तमोत्तम पदार्थ जमा हैं। हम जिस पदार्थ को मांगते हैं प्रकृति वही पदार्थ हमें देती है, बशर्ते हम उसका सही मूल्य भी दें। हम पदार्थ तो मार्ग और मूल्य न देना चाहें, तो यह सौदा नहीं हो सकता।

हमारे विचार जड़ (मूल) के समान हैं, ये निराकार शक्ति के सागर में अपनी शाखाएं दिशाओं में प्रसारित करते हैं, विचार रूपी जड़ें जब सचेष हो जाती है, जब इनमें तरंग उठने लगती हैं, तब वे अपने अनुकूल सभी पदार्थों को अपनी

और आकर्षित करने लगती हैं। परिणाम यह होता है कि हमारी इच्छाएं फलवर्ती हो जाती हैं।

विधाता ने यदि पक्षी को उड़ने की शक्ति न दी होती, तो आकाश में उन्मुक्त संचरण करने की इच्छा भी पैदा न की होती। ईश्वर ने हमें यदि लालसाओं की पूर्ति की शक्ति न दी होती तो इनकी चाह भी उत्पन्न न की होती। ईश्वर ने हमें उदात्त इच्छाएं दीं, ऊंची आकांक्षाएं दीं, महान काम करने की चाह दी, श्रेष्ठ जीवन बनाने की कामना दी; इससे साफ पता चलता है कि उसने हमें इन सम्भाव्यताओं को प्रत्यक्ष एवं साकार प्रकट करने की शक्ति और सामर्थ्य भी अवश्य दी होगी।

वनस्पति जगत् में अंकुर, पत्ते, शाखाएं, फूल और फल अपने प्राकृतिक निर्धारित समय पर, निश्चित प्रक्रिया के अनुसार आते हैं। शीत ऋतु तब तक नहीं आती जब तक कि उससे पहले कलियों की मुस्कान पुष्पों में विकसित नहीं हो जाती, पतझड़ तब तक नहीं आती जब तक नवदल एवं फल-फूल की तैयारी पूर्ण। नहीं हो जाती।

यदि हम किसी कार्य को समय से पूर्व ही पूर्ण हुआ देखना चाहते हैं, तो यह हमारी भूल है, प्रकृति की नहीं। किसी ने सच कहा है—

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।

माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय।

फल की आकांक्षा कीजिए, इसमें कुछ बुराई नहीं, परन्तु फल की आकांक्षा समय से पूर्व मत कीजिए, और समय से पूर्व फल न पाने पर अपने भाग्य को मत कोसिए।

जब पुरुष या स्त्री परिपक्व अवस्था आने से पूर्व ही फूल या फल के लिए उतावले होने लगते हैं, तो अपनी ईश्वर-तुल्य योग्यता को कम कर देते हैं। वे तब असीम सम्भावनाओं को 'असम्भव' बना देते हैं।

जब पकने से पहले सेब को तोड़ने पर उसे दुःख होता है, फिर पूर्ण होने से पहले मन की इच्छा को उखाड़ फेंकना कहां तक उचित है!

धीरज रखिए-आपका परिश्रम सफल होकर रहेगा, आपकी इच्छा पूरी होकर रहेगी, आपकी आशाओं का फूल खिलकर रहेगा, आपकी आकांक्षाओं के फल मिलकर रहेंगे।

प्रयत्न करते जाइए, पूर्ण शक्ति, योग्यता, कुशलता और सामर्थ्य से अपने उद्देश्य के प्रति निष्ठावान् रहकर कार्य करते रहिए, सफलता आपकी है, सफलता निश्चय ही आपकी है।

□□□